गीति काव्य का उद्भव और विकास -

जीवन के अंतरंग कोमल भाव जब कविता की गीति गेयता के साथ प्रकट होती है, तो उसी से गीतिकाव्य का जन्म होता है। कुछ विद्वान 'गीतिकाव्य' को 'खण्डकाव्य' से अभिन्न समझते हैं, किन्तु आधुनिक समीक्षक इसे अलग - अलग मानते हैं। खण्डकाव्य बहिरंग अभिव्यक्ति का प्रतिपादक होता है। हृदय में स्थित भाव का अतिरेक होने पर ही गीतिकाव्य की अभिव्यक्ति होती है। यह रचना निर्मित नहीं, स्वतः ~~स्फुट~~ (प्रकट) होती है।

भावातिरेक, कल्पना और संगीत - गीति काव्य के तीन प्रमुख तत्व माने गए हैं। किसी एक भाव को केन्द्रित करके ही गीतिकाव्य का स्फुरण होता है। भर्तृहरि ने शृंगार, वैराग्य और नीतिशतक को पृथक - पृथक अभिव्यक्त किया है। जयदेव जैसे कवियों ने शुद्ध - संगीतमय रागों का ही प्रयोग किया है। संक्षेप में गीति काव्य का यह लक्षण दिया जा सकता है -

भावानामात्म निष्ठानां कल्पनावलितं लघु।
स्फुरणं गेयरूपेण गीतिकाव्यं निगद्यते॥

संस्कृत - गीतिकाव्यों में मुख्य रूप से शृंगार, नीति, वैराग्य, विरह, भक्ति, ऋतुवर्णन, देवस्तुति आदि किसी एक विषय को चुनकर उसे संवेगात्मक अभिव्यक्ति दी गयी है।

संस्कृत गीति काव्यों में भाषा और भाव का समन्वय होता है। इनके दो वर्ग हैं (i) शृंगारमूलक भक्तिमूलक (स्तोत्र-काव्य) - ये स्तोत्र-काव्य अपने आराध्य देवता, गुरु या आचार्य के प्रति श्रद्धा प्रकट करने वाले काव्य होते हैं।

(ii) शृंगारमूलक गीति काव्यों में ऋतु-वर्णन, सौंदर्य प्रेम, प्रेम तथा विरह के भावनाओं आदि का प्रकाशन होता है।

Scanned with CamScanner

गीतिकाव्य का उद्गम ऋग्वेद की ऋचाओं से माना जाता है। इनमें अग्नि, इन्द्र, विष्णु आदि देवताओं की स्तुति जो विविध ऋषियों के द्वारा की गई हैं। भक्तों का समर्पण भाव इनमें श्लाघनीय (प्रशंसनीय) है। इन्द्र के प्रति एक ऋचा में कहा गया है – 'तुञ्जे तुञ्जे य उत्तरे, स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः। न विन्धे अस्य सुष्टुतिम्।' (ऋ० - 1/7/7)

अथर्व वेद में भूमि की स्तुति में गीति-काव्य का विन्यास है। सामवेद का संगीत-पक्ष गीतिकाव्य के अनन्य गुण को विशेष रूप से धारण करता है। इसलिए वैदिक युग ही गीतिकाव्य के लिए ठोस धरातल देता है।

रामायण का उदय गीतिकाव्य के रूप में ही हुआ है। इसमें ऋतु-वर्णन, स्त्री-सौन्दर्य का चित्रण, विरह-वर्णन, देव-स्तुति आदि गीतितत्व को स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट करते हैं। महाभारत में प्राप्त होनेवाली स्तुतियां भी गीतिकाव्य का स्वरूप मानी जाती हैं। गीता के एकादश अध्याय में भगवान कृष्ण का विराट रूप-वर्णन सुन्दर स्तोत्र-काव्य है। पुराणों में – भागवत, विष्णु, नारद आदि पुराण विविध देवताओं की स्तुतियों से भरे हैं। अध्यात्म-रामायण में भी राम की स्तुति ब्रह्म के रूप में की गयी है।

संस्कृत में शृंगारशतक, अमरुक शतक, मेघदूत तथा चौरपञ्चाशिका जैसे उत्कृष्ट शृंगार पूर्ण गीतिकाव्य लिखे गये हैं। यह प्रकृति-चित्रण भी सहायक उपादान के रूप में स्वीकृत होता है। इनका स्वरूप सामान्य रूप से मुक्तक का है, जिसके प्रत्येक पद्य स्वतंत्र है। 'मेघदूत' जैसे काव्य इसके अपवाद-स्वरूप प्रबन्धात्मक काव्य की शैली में आते हैं।

संस्कृत में मुख्य रूप से ये गीतिकाव्य महत्वपूर्ण हैं – Contd.

Uma Rani BA I Sr
Skt Deptt. + III Yr.